Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

गुरु तेग बहादुर का जीवन, संघर्ष और शहादत: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

राजीव कुमार
शोधार्थी, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा।
डॉ. नीलम रानी
सहायक प्रोफेसर, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा।
प्रो. विष्णु भगवान
लोक प्रशासन विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा।

सार
यह शोधपत्र मुगल सम्राट औरंगज़ेब की धार्मिक नीतियों, गुरु तेग बहादुर की शहादत तथा भाई जैता की ऐतिहासिक भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि गुरु तेग बहादुर का बलिदान केवल किसी एक समुदाय की रक्षा के लिए नहीं, बल्कि धार्मिक स्वतंत्रता, मानवाधिकार तथा अंतरात्मा की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए था। इस संघर्ष में भाई जैता ने असाधारण साहस, निष्ठा और समर्पण का परिचय देते हुए गुरु तेग बहादुर के पावन शीश को दिल्ली से आनंदपुर साहिब तक सुरक्षित पहुँचाया। गुरु गोबिंद सिंह द्वारा उन्हें "रंगरेट्टे गुरु के बेटे" की उपाधि प्रदान करना सामाजिक समानता तथा जातिगत भेदभाव के विरुद्ध सिख दर्शन का सशक्त उदाहरण है। शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के आधार पर भाई जैता के योगदान का ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भाई जैता का योगदान भारतीय इतिहास, धार्मिक स्वतंत्रता और सिख परंपरा में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।
कुंजी शब्द: गुरु तेग बहादुर, भाई जैता, औरंगज़ेब, धार्मिक स्वतंत्रता, शहादत, सिख इतिहास, रंगरेट्टे।

भूमिका
भारतीय इतिहास में सिख गुरुओं का योगदान केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने सामाजिक समानता, मानवता, धार्मिक स्वतंत्रता तथा न्याय की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सिख इतिहास में गुरु तेग बहादुर की शहादत विश्व इतिहास की उन महान घटनाओं में गिनी जाती है, जहाँ किसी अन्य धर्म के लोगों के धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए स्वेच्छा से अपना जीवन बलिदान कर दिया गया। इस ऐतिहासिक घटना में भाई जैता का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था, जिन्होंने अपने प्राणों की परवाह किए बिना गुरु तेग बहादुर के पावन शीश को सुरक्षित आनंदपुर साहिब पहुँचाया। यह शोधपत्र औरंगज़ेब की धार्मिक नीति, गुरु तेग बहादुर के बलिदान तथा भाई जैता की ऐतिहासिक भूमिका का

समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय इतिहास में कुछ ऐसी घटनाएँ हैं जिन्होंने केवल तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों को ही नहीं, बल्कि धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन को भी गहराई से प्रभावित किया। गुरु तेग बहादुर जी की शहादत ऐसी ही एक ऐतिहासिक घटना है, जिसने धार्मिक स्वतंत्रता, मानवीय अधिकारों तथा अंतरात्मा की स्वाधीनता की रक्षा के लिए बलिदान की सर्वोच्च परंपरा स्थापित की। यह शहादत किसी राज्य विस्तार, राजनीतिक सत्ता या व्यक्तिगत हित के लिए नहीं थी, बल्कि उस सिद्धांत के समर्थन में थी कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आस्था के अनुसार जीवन जीने और अपने धर्म का पालन करने का अधिकार है। सत्रहवीं शताब्दी का भारत राजनीतिक रूप से मुगल शासन के अधीन था। इस काल में सम्राट औरंगज़ेब द्वारा अपनाई गई धार्मिक नीतियों ने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को प्रभावित किया। धार्मिक असहिष्णुता, जबरन धर्म परिवर्तन तथा वैचारिक असहमति के प्रति कठोर दृष्टिकोण ने अनेक सामाजिक और धार्मिक संघर्षों को जन्म दिया।

इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में गुरु तेग बहादुर जी ने अन्याय के विरुद्ध खड़े होकर ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया, जिसने उन्हें भारतीय इतिहास में धार्मिक स्वतंत्रता के महानतम रक्षकों में स्थान दिलाया। गुरु तेग बहादुर जी की शहादत का वर्णन करते समय सामान्यतः ध्यान उनके बलिदान तक सीमित रह जाता है, जबकि इस ऐतिहासिक घटना को सफल बनाने वाले अनेक समर्पित सिखों की भूमिका अपेक्षित महत्व प्राप्त नहीं कर सकी। इन्हीं में भाई जैता का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने अत्यंत कठिन परिस्थितियों में अपने साहस, सूझबूझ और गुरु-भक्ति का परिचय देते हुए गुरु तेग बहादुर जी के पावन शीश को दिल्ली से आनंदपुर साहिब तक सुरक्षित पहुँचाया। यह कार्य केवल व्यक्तिगत निष्ठा का उदाहरण नहीं था, बल्कि सिख परंपरा में सेवा, समर्पण और बलिदान की सर्वोच्च अभिव्यक्ति भी था। इतिहास लेखन की दृष्टि से यह भी महत्वपूर्ण है कि भाई जैता का उल्लेख अधिकांश ग्रंथों में संक्षेप में मिलता है।

उनके व्यक्तित्व, कार्यों तथा ऐतिहासिक योगदान का स्वतंत्र एवं समग्र अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। परिणामस्वरूप सिख इतिहास के इस महान पात्र का वास्तविक योगदान व्यापक ऐतिहासिक विमर्श में पर्याप्त रूप से स्थापित नहीं हो सका। यह शोधपत्र इसी रिक्ति को भरने का प्रयास है। औरंगज़ेब की धार्मिक नीति, गुरु तेग बहादुर जी की शहादत तथा भाई जैता की भूमिका का ऐतिहासिक स्रोतों के आधार पर विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह समझने का प्रयास किया गया है कि भाई जैता का योगदान केवल एक ऐतिहासिक घटना तक सीमित नहीं था, बल्कि वह सामाजिक समानता, धार्मिक स्वतंत्रता और मानवीय मूल्यों की रक्षा की व्यापक परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। यह अध्ययन सिख इतिहास के एक उपेक्षित नायक के योगदान को पुनः प्रकाश में लाने का प्रयास है तथा भारतीय इतिहास में उनके उचित स्थान को रेखांकित करता है।

शोध के उद्देश्य

- गुरु तेग बहादुर की शहादत में भाई जैता की भूमिका का मूल्यांकन करना।
- भाई जैता के साहस, सेवा और बलिदान का ऐतिहासिक महत्व स्पष्ट करना।
- गुरु गोबिंद सिंह द्वारा प्रदत्त "रंगरेट्टे गुरु के बेटे" की उपाधि के सामाजिक एवं ऐतिहासिक महत्व का विश्लेषण करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध गुणात्मक एवं ऐतिहासिक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में गुरु ग्रंथ साहिब, बचित्र नाटक, श्री गुर सोभा, भट्ट वाहियाँ, गुरबिलास तथा समकालीन ऐतिहासिक दस्तावेजों का अध्ययन किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में सिख इतिहास, मुगलकालीन इतिहास तथा आधुनिक इतिहासकारों की पुस्तकों एवं शोधपत्रों का विश्लेषण किया गया है। उपलब्ध स्रोतों का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन करके तथ्यों का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

गुरु-शिष्य संबंध

भाई जैता न केवल गुरु तेग बहादुर के अत्यंत विश्वसनीय सिख थे, बल्कि वे दशम गुरु, गुरु गोबिंद सिंह के एक प्रमुख सेनापति भी थे।[1] सिख इतिहास में उनका प्रमुख उल्लेख गुरु तेग बहादुर के शहीदी प्रसंग से जुड़ा हुआ है। वे गुरु तेग बहादुर के पाँच प्रमुख सिखों में सम्मिलित थे।[2] सर्वविदित है कि गुरु तेग बहादुर सिखों के नवें गुरु थे। अपने अद्वितीय बलिदान और शहादत के कारण उन्हें "हिन्द दी चादर" (हिंदुस्तान की ढाल) के नाम से सम्मानित किया जाता है।[3] उनकी शहादत का वर्णन करने से पूर्व उनके बलिदान के कारणों को समझना अत्यंत आवश्यक है। गुरु नानक देव के पश्चात गुरु तेग बहादुर ऐसे गुरु थे जिन्होंने धर्म एवं गुरु नानक देव की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से अनेक स्थानों की यात्राएँ कीं।[4] उनके उपदेशों के परिणामस्वरूप जनसाधारण में धार्मिक जागरूकता का व्यापक प्रसार हुआ। अनेक लोग उनकी शिक्षाओं से प्रभावित होकर उनके भक्त बन गए तथा उनके अनुयायी बनने लगे। विशेष रूप से निम्न जातियों से संबंधित लोगों ने बड़ी संख्या में उनकी शरण ग्रहण की और उनके उपदेशों का अनुसरण करना प्रारम्भ कर दिया। गुरु तेग बहादुर की इन गतिविधियों और प्रभावशाली प्रचार के कारण तत्कालीन ब्राह्मणों तथा मौलवियों को अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा और धार्मिक प्रभाव पर संकट दिखाई देने लगा। धर्म के नाम पर जो उनका प्रभुत्व और आजीविका का आधार था, वह धीरे-धीरे समाप्त होने लगा। परिणामस्वरूप वे गुरु तेग बहादुर से ईर्ष्या करने लगे। अपने प्रभाव और हितों की रक्षा करने के उद्देश्य से उन्होंने मुगल सम्राट औरंगज़ेब के समक्ष गुरु तेग बहादुर के विरुद्ध शिकायत की। उन्होंने औरंगज़ेब से कहा कि गुरु तेग बहादुर लोगों को उनके पारंपरिक धर्मों से विमुख कर रहे हैं तथा उन्हें अपने मत का अनुयायी बना रहे हैं। इसलिए उन्होंने

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सम्राट से इस गतिविधि को रोकने का आग्रह किया।[5] गुरु तेग बहादुर ने लोगों को प्रोत्साहित किया और उनमें इस प्रकार निर्भयता का संचार किया–

"भै काहू कउ देत नहि, न भै मानत आन।"[6]

(अर्थात् न किसी को भयभीत करो और न ही किसी अन्य का भय स्वीकार करो।)

गुरु तेग बहादुर जैसे उपदेशक उस समय स्वतंत्र रूप से विचरण नहीं कर सकते थे, क्योंकि यह मुगल सम्राट औरंगज़ेब की धार्मिक नीतियों के विरुद्ध था। सिक्खों की बढ़ती हुई गतिविधियों तथा उनकी एकता से औरंगज़ेब स्वयं को असुरक्षित अनुभव करने लगा। गुरु तेग बहादुर के नेतृत्व में सिक्खों की धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियाँ निरंतर प्रोत्साहित हो रही थीं और उनका प्रभाव लगातार बढ़ता जा रहा था। प्रारंभिक वर्षों में औरंगज़ेब ने इन गतिविधियों में विशेष हस्तक्षेप नहीं किया, क्योंकि वह अपने शासन को सुदृढ़ करने में व्यस्त था।[7] परंतु शीघ्र ही वह सिक्खों की बढ़ती गतिविधियों की उपेक्षा नहीं कर सका। उसने उनकी गतिविधियों को यथाशीघ्र समाप्त करने का निश्चय किया, क्योंकि सिक्खों की बढ़ती लोकप्रियता और प्रभाव को सहन करना उसके लिए कठिन होता जा रहा था।[8] प्रसिद्ध लेखक सी. एच. पेन (C. H. Payne) के अनुसार, 1645 से 1672 ई. के मध्य मुगल सम्राट सातवें, आठवें और नौवें सिक्ख गुरुओं के विरोधी रहे। 1658 ई. में औरंगज़ेब के मुगल सिंहासन पर बैठने के बाद उसने सिक्ख गुरुओं को कष्ट पहुँचाने का कोई अवसर नहीं छोड़ा।[9] पाँचवें गुरु गुरु अर्जन देव के समय से ही उनके कुछ निकट संबंधियों की दृष्टि गुरुगद्दी पर लगी हुई थी। गुरु अर्जन देव के समय पृथी चंद ने गुरुगद्दी प्राप्त करने के लिए भरसक प्रयास किए।[10] गुरु हरगोबिंद के काल में मेहरबान ने भी गुरुगद्दी प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास किया।[11] सातवें गुरु गुरु हर राय का पीर मल ने घोर विरोध किया, क्योंकि वह स्वयं गुरुगद्दी की शक्ति प्राप्त करना चाहता था।[12] इस प्रकार के चुगलखोर व्यक्तियों ने लगातार नकारात्मक वातावरण बनाया। इसके बाद मुगल सम्राट की सहायता से राम राय (सातवें गुरु हर राय के ज्येष्ठ पुत्र) ने आठवें गुरु गुरु हरकृष्ण से गुरुगद्दी छीनने का प्रयास किया।[13] इसी प्रकार राम राय तथा अन्य विरोधियों ने नौवें गुरु गुरु तेग बहादुर के विरुद्ध भी शिकायतें करनी आरम्भ कर दीं। राम राय का मुगल सम्राट औरंगज़ेब के साथ घनिष्ठ संबंध था।[14]

औरंगज़ेब की धार्मिक नीति एवं गुरु तेग बहादुर की शहादत के कारण

औरंगज़ेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। उसने अकबर की धर्मनिरपेक्ष नीति को अस्वीकार कर दिया।[15] उसने अपने भाइयों तथा अन्य रिश्तेदारों की हत्या करके मुगल सिंहासन पर अधिकार किया। इस सिंहासन को प्राप्त करने के लिए उसने 18 जून 1658 को अपने पिता को कारागार में डाल दिया। इसके अतिरिक्त उसने अपने बड़े भाई दारा शिकोह को बेघर कर दिया तथा अपने छोटे भाई को विश्वासघात करके बंदी बनाया और बाद में उसकी हत्या करवा दी। उसने अपने बड़े पुत्र (मुअज़्ज़म) का भी अपमान किया। इस प्रकार उसने

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

अपने ही रक्त संबंधियों की हत्या करके दिल्ली का सिंहासन प्राप्त किया।[16] उसके इन कार्यों से मुसलमानों के हृदय में भी उसके प्रति घृणा उत्पन्न हो गई। ऐसी स्थिति में उसने मौलानाओं से विचार-विमर्श किया कि वह अपने साम्राज्य में अपनी प्रतिष्ठा किस प्रकार स्थापित कर सकता है।[17] उन्होंने सम्राट को सलाह दी कि यदि वह हिंदुओं को मुसलमान बना दे, तो उसे अपने राज्य की जनता से वह सम्मान प्राप्त होगा जिसकी उसे इच्छा थी। उन्होंने यह भी सलाह दी कि वह मक्का-मदीना में बहुत-सा धन और उपहार भेजे। उनका कहना था कि वहाँ के लोग इन उपहारों को स्वीकार करेंगे और बदले में सम्राट के लिए एक अधिकार-पत्र लेकर आएँगे। इसके बाद जब यह योजना सफल हो जाएगी, तब सम्राट आदेश देगा कि उसके शासनकाल में सभी हिंदुओं को इस्लाम धर्म स्वीकार करना होगा। जो हिंदू इस्लाम धर्म स्वीकार करेंगे, उन्हें सरकारी नौकरियाँ, उच्च पद तथा अन्य अनेक सुविधाएँ प्रदान की जाएँगी। औरंगज़ेब ने इस योजना का अनुसरण करने का निर्णय लिया और उस पर कार्य करना प्रारम्भ कर दिया।[18] उसने मौलवियों को अपने पक्ष में कर लिया। मौलवियों पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के बाद उसने धर्मयुद्ध (क्रूसेड) जैसी नीति पर ध्यान देना प्रारम्भ किया। इसके अतिरिक्त उसने संतों तथा शिया मुसलमानों की हत्या भी प्रारम्भ कर दी।[19] सभी हिंदुओं को मुसलमान बनाने के उद्देश्य से उसने सबसे पहले कश्मीर क्षेत्र को चुना।[20] कश्मीर को चुनने के दो प्रमुख कारण थे। पहला, कश्मीरी ब्राह्मण समाज में अत्यधिक सम्मानित थे। इसके अतिरिक्त वे पुरोहित तथा प्रभावशाली धर्म-प्रचारक थे। यदि ये ब्राह्मण इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेते, तो उसके लिए अन्य हिंदुओं को भी इस्लाम धर्म में परिवर्तित करना अत्यंत सरल हो जाता। हिंदुस्तान के समस्त लोगों को मुसलमान बनाने का उद्देश्य रखा गया था, क्योंकि कश्मीरी ब्राह्मणों का उस समय समाज पर अत्यधिक प्रभाव था और अधिकांश लोग उनका अनुसरण करते थे।[21]

दूसरे, पेशावर और काबुल दो इस्लामी क्षेत्र थे, जो कश्मीर के पड़ोसी थे। यह कहा गया कि यदि ये ब्राह्मण इस्लाम स्वीकार करने से इंकार करेंगे, तो इन दोनों इस्लामी क्षेत्रों के प्रभाव और धार्मिक अभियान के कारण उनकी हत्या कर दी जाएगी।[22] औरंगज़ेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। उसने अनेक हिंदू मंदिरों, विद्यालयों तथा धर्मशालाओं को ध्वस्त कर दिया। उसने अपने सभी सूबेदारों को आदेश दिया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में स्थित हिंदुओं के सभी प्रमुख मंदिरों और शिक्षण संस्थानों को नष्ट कर दें।[23] मुगल सम्राट की इस कट्टर धार्मिक नीति के कारण पूरे देश में अशांति फैल गई। इसी परिस्थिति में पंडित कृपा राम के नेतृत्व में सोलह कश्मीरी पंडितों का एक प्रतिनिधिमंडल गुरु तेग बहादुर जी के पास सहायता की प्रार्थना लेकर पहुँचा। उन्होंने गुरु जी को कश्मीर की दयनीय स्थिति से अवगत कराया और बताया कि औरंगज़ेब का एक सूबेदार, अफ़गान ख़ान, उन्हें बलपूर्वक इस्लाम स्वीकार करने के लिए विवश कर रहा है।[24] उनकी बात सुनकर गुरु तेग बहादुर जी गंभीर

चिंतन में डूब गए। उन्होंने अनुभव किया कि केवल कश्मीर ही नहीं, बल्कि पूरा देश इस अत्याचार का शिकार बन चुका है। यह समस्या उन सभी गैर-मुस्लिम समुदायों से जुड़ी थी जो मुगल सम्राट की धार्मिक नीतियों के कारण उत्पीड़न सह रहे थे।[25] कुछ समय विचार करने के बाद गुरु जी ने संगत के समक्ष घोषणा की कि हिंदू धर्म की रक्षा के लिए किसी महान पुरुष का बलिदान आवश्यक है। इसके पश्चात उन्होंने कश्मीरी ब्राह्मणों से कहा कि वे औरंगज़ेब को यह संदेश दें कि यदि हिंदुओं के गुरु, गुरु तेग बहादुर, इस्लाम स्वीकार कर लें, तो पूरे देश के हिंदू भी इस्लाम स्वीकार कर लेंगे।[26] तदनुसार, कश्मीरी ब्राह्मणों ने गुरु जी का यह संदेश मुगल सम्राट औरंगज़ेब तक पहुँचाया। यह संदेश प्राप्त होने पर औरंगज़ेब ने गुरु तेग बहादुर जी को दिल्ली दरबार में उपस्थित होने का आदेश दिया।[27] गुरु तेग बहादुर जी अपने पाँच प्रमुख सिखों के साथ आनंदपुर से पैदल दिल्ली की ओर प्रस्थान कर गए। इन पाँच प्रमुख सिखों में भाई जैता भी सम्मिलित थे।[28]

गुरु तेग बहादुर की गिरफ्तारी एवं शहादत

उस समय मुगल सम्राट औरंगज़ेब हसन अब्दाल (काबुल) के अभियान में व्यस्त था। इसलिए गुरु तेग बहादुर ने मार्ग में सिख धर्म का प्रचार-प्रसार करते हुए पैदल दिल्ली जाने का निश्चय किया। भाई जैता के साथ गुरु तेग बहादुर आनंदपुर से रवाना हुए और रोपड़, मकरापुर, काबुलपुर तथा नन्हेरी सहित अनेक गाँवों से होते हुए गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं का प्रचार करते हुए आगे बढ़े। इन गाँवों से होकर गुरु अपने पाँच प्रमुख सिखों सहित सैफाबाद पहुँचे। सैफाबाद गाँव के धनी सैयद सैफ अली ख़ान ने गुरु तेग बहादुर का अत्यंत सम्मान किया और उन्हें अपने घर ले गया। सैफ अली ख़ान ने निर्धनों एवं जरूरतमंदों की सेवा के लिए गुरु के कार्यों की सराहना की तथा हिंदू धर्म की रक्षा के लिए किए गए उनके प्रयासों की भी प्रशंसा की। गुरु की प्रशंसा सुनकर मोहम्मद बख़्श भी सैफाबाद गाँव में उनसे मिलने पहुँचा। सैफाबाद से गुरु तेग बहादुर कायमपुर, बिलासपुर होते हुए समाना पहुँचे। समाना में गुरु तेग बहादुर और भाई जैता मोहम्मद बख़्श राजपूत की गढ़ी में ठहरे। अगले दिन किसी ने औरंगज़ेब को सूचना दी कि गुरु तेग बहादुर अपने पाँच प्रमुख सिखों–भाई जैता, भाई मती दास, भाई गुरदित्त, भाई दयाला तथा भाई उदे–के साथ उस गढ़ी में ठहरे हुए हैं। जब बादशाह के सैनिक गढ़ी पर पहुँचे, तब मोहम्मद बख़्श ने यह कहकर उन्हें लौटा दिया कि वह स्वयं भी हिंदुओं का विरोधी है। गुरु तेग बहादुर और भाई जैता कई दिनों तक इसी गढ़ी में रहे। दिल्ली की ओर यात्रा करते हुए गुरु ने मार्ग में अनेक मीठे पानी के कुएँ खुदवाए तथा जनकल्याण के अनेक कार्य किए।

समाना से गुरु तेग बहादुर कैथल पहुँचे। वहाँ से गुरु और भाई जैता लाखनमाजरा पहुँचे। लाखनमाजरा से वे राजोमाजरा और उसके बाद मूलोवाल पहुँचे। इस गाँव में पीने के पानी का अभाव था। गुरु तेग बहादुर ने अपने आशीर्वाद से इस स्थान पर प्रचुर मात्रा में पेयजल

उपलब्ध कराया। अपने सत्कर्मों और उपदेशों के कारण वे जनसाधारण के बीच अत्यंत लोकप्रिय होते गए और उनके अनुयायियों की संख्या निरंतर बढ़ती गई।

यह सूचना गुप्तचरों द्वारा सम्राट तक पहुँचा दी गई। सम्राट चाहता था कि वह गुरु को यथाशीघ्र दिल्ली लाया जाए ताकि उनका धर्म परिवर्तन कराया जा सके। इसी समय गुरु तेग बहादुर, भाई जैता तथा अन्य सिखों के साथ चीका, कैथल, जींद, कनौद आदि नगरों से होते हुए आगरा पहुँचे। आगरा में गुरु ने एक गड़रिये को अपनी बहुमूल्य अंगूठी देकर मिठाई लाने के लिए भेजा। गुरु ने उससे कहा कि यदि कोई इस अंगूठी के बारे में पूछे, तो वह बता दे कि हिंदुओं के गुरु ने उसे यह कार्य करने के लिए भेजा है। उस गड़रिये के पिता हसन अली ने इनाम पाने की लालसा में गुरु के संबंध में यह सूचना पुलिस को दे दी। यह समाचार शीघ्र ही औरंगज़ेब तक पहुँच गया। पुलिस ने इसकी सूचना शासन को दी। इसके बाद सम्राट ने सदर दीन उमराव को आदेश दिया कि वह आगरा से गुरु को गिरफ्तार करके दिल्ली लाए। गुरु को कड़ी सैनिक निगरानी में दिल्ली लाया गया। दिल्ली पहुँचने पर उन्हें निज़ाम सफ़ी ख़ाँ तथा किलेदार मुंतख़िव ख़ाँ की अभिरक्षा में सौंप दिया गया।

गुरु के साथ जिन सिखों को गिरफ्तार किया गया, उनमें भाई सती दास, भाई मती दास तथा भाई दयाला सम्मिलित थे। जब गुरु को गिरफ्तार किया गया, तब उन्होंने भाई जैता को स्वयं गिरफ्तार होने से रोक दिया और कहा कि भविष्य में उन्हें अभी एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। गुरु तथा उनके तीनों सिख साथियों को एक हवेली में अलग रखा गया। भाई जैता एक मुस्लिम जमादार का वेश धारण करके प्रतिदिन जेल की सफाई करने जाते थे। वे गुरु के अगले आदेश की प्रतीक्षा करते रहे। बाद में गुरु को हवेली से कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच चाँदनी चौक ले जाया गया। सोहन लाल सूरी ने अपनी पुस्तक उमदत-उत-तवारीख में लिखा है कि गुरु ने कारागार को भी एक सुंदर उपवन के समान माना। वे जेल में अपना समय वाहेगुरु का स्मरण एवं ध्यान करके व्यतीत करते थे। कारावास के दौरान उन्हें अनेक कष्टों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसके अतिरिक्त, मुगल सम्राट के आदेशानुसार उन्हें कारागार में लंबे समय तक खड़े रहने के लिए विवश किया जाता था। इतनी कठोर यातनाओं के बावजूद उनके मुखमंडल पर अद्भुत तेज बना रहा और उनका व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक एवं दिव्य दिखाई देता था। भाई जैता का शरीर अत्यंत सुदृढ़ था और वे अत्यंत ऊर्जावान व्यक्ति थे। वे प्रतिदिन जेल की सफाई का कार्य करते थे तथा प्रत्येक अवसर पर गुरु तेग बहादुर जी की ओर इस आशा से देखते थे कि उन्हें अगला आदेश प्राप्त हो। जेल में गुरु तेग बहादुर जी की दयनीय अवस्था देखकर भाई मती दास अत्यंत व्यथित हुए। उन्होंने गुरु जी से कहा कि यदि वे आज्ञा दें तो वे दिल्ली को नष्ट कर सकते हैं। इस पर गुरु जी ने उत्तर दिया कि सच्चा गुरु वही है जो धैर्यपूर्वक जीवन व्यतीत करे और सदैव परमात्मा की इच्छा (हुक्म) में संतुष्ट रहे। गुरु तेग बहादुर जी ने कारावास

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

के दौरान 57 शलोक और 59 शब्दों की रचना की। भाई जैता की अथक सेवा तथा ऊर्जावान स्वभाव से प्रसन्न होकर गुरु जी ने उन्हें दिल्ली से आनंदपुर पैदल ही पत्र और संदेश पहुँचाने का महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा। भाई जैता इन पत्रों और संदेशों को माता नानकी, माता गुजरी तथा गोबिंद राय तक पहुँचाते थे और वहाँ से उनके उत्तर लेकर पुनः पैदल दिल्ली लौट आते थे। गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रसिद्ध दरबारी कवि कवि कंकण तथा भाई बीर सिंह बल ने अपनी रचनाओं में भाई जैता की तुलना पवनसुत (हनुमान) से की है, क्योंकि वे वायु के समान तीव्र गति से पैदल यात्रा करते थे। ज्ञानी करतार सिंह क्लासवालिया द्वारा रचित दुष्ट-दमन प्रकाश में भी उल्लेख मिलता है कि भाई जैता दिल्ली से आनंदपुर और आनंदपुर से दिल्ली तक पत्रों का आदान-प्रदान करते थे।

इसी प्रकार भाई जैता गुरु तेग बहादुर जी द्वारा रचित शलोकों और शब्दों को गोबिंद राय तक पहुँचाते रहे। यही वाणी आज श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी संकलित है। इस प्रकार भाई जैता ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना अत्यंत संकटपूर्ण परिस्थितियों में 57 शलोक और 59 शब्दों को सुरक्षित पहुँचाकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संकलन को पूर्ण करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कारावास के दौरान गुरु तेग बहादुर जी ने एक शलोक लिखकर भाई जैता को आदेश दिया कि वे बिना कहीं रुके उसे गोबिंद राय तक पहुँचाएँ और वहाँ से उसका उत्तर लेकर वापस आएँ। यह शलोक वास्तव में गोबिंद राय की परीक्षा लेने के उद्देश्य से भेजा गया था, ताकि यह परखा जा सके कि वे गुरुगद्दी संभालने के योग्य हैं या नहीं।

पावन शीश का आनंदपुर आगमन एवं अंतिम संस्कार

गुरु गोबिंद राय ने घोषणा की कि अब से रंगरेट्टों को सरोवर में स्नान करने का पूर्ण अधिकार होगा और कोई भी उन्हें ऐसा करने से नहीं रोक सकेगा। उन्होंने दुःखभंजनी बेरी के दक्षिण दिशा में रंगरेट्टों के नाम पर एक किला भी बनवाया। इस प्रकार भाई जैता के महान त्याग, अद्वितीय साहस और सेवा-भाव के कारण संपूर्ण रंगरेट्टा समुदाय को गुरु की संतान कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ। प्रारम्भ में गुरु तेग बहादुर जी के पावन शीश का अंतिम संस्कार कीरतपुर में करने का विचार किया गया था। किन्तु बीबी नानकी ने कहा कि मेरे पुत्र ने स्वयं आनंदपुर नगर की स्थापना की है, इसलिए उनके पावन शीश का अंतिम संस्कार भी वहीं किया जाना चाहिए। कीरतपुर के श्रद्धालुओं ने एक पालकी की व्यवस्था की, जिसमें गुरु तेग बहादुर जी का पावन शीश स्थापित किया गया। असंख्य श्रद्धालु एक विशाल नगर कीर्तन के रूप में पालकी के पीछे-पीछे चलते हुए निरंतर कीर्तन करते रहे। यह जत्था बड्डुल, मेडला, मतौर तथा लोधीपुर आदि गाँवों से होकर आनंदपुर पहुँचा। आनंदपुर पहुँचने पर गुरु जी के मामा कृपाल चंद ने श्रद्धापूर्वक पावन शीश को नमन किया। इसके पश्चात श्रद्धालु पालकी सहित उस स्थान पर पहुँचे जहाँ आज गुरुद्वारा श्री सीस गंज साहिब स्थित है। वहाँ अत्यंत श्रद्धा और सम्मान के साथ भाई जैता के सिर से गुरु जी का पावन शीश उतारकर विधिपूर्वक स्थापित किया गया तथा सभी संगत ने श्रद्धापूर्वक मत्था

टेका। 16 नवम्बर 1675 को गुरु तेग बहादुर जी के पावन शीश का अंतिम संस्कार सम्पन्न किया गया। चिता के लिए चंदन की लकड़ियों का उपयोग किया गया तथा पावन शीश को गुलाब जल से स्नान कराया गया। गुरु परम्परा के अनुसार गुरबाणी के पावन पाठ के साथ अंतिम संस्कार की धार्मिक विधि सम्पन्न हुई।

इस महान कार्य के लिए गुरु गोबिंद राय ने समस्त संगत के समक्ष भाई जैता की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उसी सभा में औरंगज़ेब का एक गुप्तचर भी उपस्थित था। उसने मुगल सम्राट को यह सूचना दी कि एक रंगरेट्टा सिख, भाई जैता, गुरु तेग बहादुर जी का पावन शीश दिल्ली से आनंदपुर साहिब तक सुरक्षित ले आया है। यह समाचार सुनकर मुगल सम्राट औरंगज़ेब क्रोध से भर उठा। उसके गुप्तचरों ने उसे बताया कि दिल्ली में जिस सिर को गुरु तेग बहादुर जी का पावन शीश समझा गया था, वह वास्तव में भाई जैता के पिता भाई सदा नंद का सिर था। यह सत्य जानकर औरंगज़ेब अत्यंत आश्चर्यचकित और स्तब्ध रह गया। भाई जैता गुरु तेग बहादुर जी तथा गुरु गोबिंद सिंह जी के अत्यंत विश्वसनीय, निष्ठावान और समर्पित सिख थे। जब गुरु तेग बहादुर जी ने कश्मीरी ब्राह्मणों के धर्म और धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने का निर्णय लिया, तब भाई जैता उनके साथ आनंदपुर से पैदल दिल्ली की यात्रा पर चले। यात्रा के दौरान उन्होंने अनेक गाँवों से होकर गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं का प्रचार किया तथा जनकल्याण का कार्य किया। आगरा पहुँचने पर गुरु तेग बहादुर जी को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें बंदी बनाकर कारागार में रखा गया। गुरु जी के आदेशानुसार भाई जैता को उनके साथ बंदी नहीं बनाया गया, बल्कि वे जेल के बाहर ही रहे। उन्होंने एक मुस्लिम सफाईकर्मी (जमादार) का वेश धारण कर मुगलों की प्रत्येक गतिविधि पर गुप्त रूप से निगरानी रखी।

भाई जैता अनेक बार पैदल दिल्ली से आनंदपुर जाकर गुरु तेग बहादुर जी के पत्र गुरु गोबिंद राय तक पहुँचाते थे तथा उनके उत्तर पुनः दिल्ली लेकर आते थे। गुरु तेग बहादुर जी ने कारागार से अपने 57 शलोक और 59 शब्द भी भाई जैता के माध्यम से आनंदपुर भिजवाए। इसके अतिरिक्त, गुरु जी ने गुरु गोबिंद राय को गुरुगद्दी प्रदान करने के लिए आवश्यक सामग्री–एक नारियल, पाँच पैसे और तिलक–भी भाई जैता के माध्यम से दिल्ली से आनंदपुर भेजी। सन् 1675 में चाँदनी चौक, दिल्ली में गुरु तेग बहादुर जी शहीद हुए। गुरु गोबिंद राय के आदेशानुसार भाई जैता और उनके पिता भाई सदा नंद गुरु जी का पावन शीश लेने के लिए दिल्ली पहुँचे। योजना के अनुसार भाई सदा नंद का सिर गुरु जी के पावन शीश के स्थान पर रख दिया गया, जबकि भाई जैता गुरु तेग बहादुर जी का पावन शीश सुरक्षित रूप से आनंदपुर साहिब ले आए। उधर, गुरु जी के पावन शरीर का अंतिम संस्कार रायसीना स्थित कल्याणा की सराय में लखी शाह वंजारा तथा उनके सहयोगियों द्वारा किया गया। आनंदपुर में गुरु गोबिंद राय ने गुरु तेग बहादुर जी का पावन शीश प्राप्त करने के पश्चात भाई जैता को उनके अद्वितीय साहस, निष्ठा और सेवा के लिए "रंगरेट्टे गुरु

के बेटे" की उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया। इस प्रकार भाई जैता ने अपने समुदाय का गौरव बढ़ाया। गुरु घर के प्रति उनका त्याग, समर्पण और बलिदान सिख इतिहास में अनुपम एवं अद्वितीय माना जाता है।

खालसा पंथ में दीक्षा और भाई जीवन सिंह

बैसाखी, 1699 को गुरु गोबिन्द सिंह ने आनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की स्थापना की। इस अवसर पर भाई जैता ने अमृत ग्रहण किया और उनका नया नाम भाई जीवन सिंह रखा गया। इसके बाद उनका जीवन और अधिक अनुशासित, संगठित तथा सैनिक आदर्शों से प्रेरित हो गया। खालसा की दीक्षा के पश्चात् भाई जीवन सिंह ने केवल धार्मिक सेवाओं तक ही स्वयं को सीमित नहीं रखा, बल्कि सिख सेना के संगठन, युद्ध-प्रशिक्षण तथा धर्म की रक्षा के संघर्षों में सक्रिय भूमिका निभाई। वे गुरु गोबिन्द सिंह के विश्वसनीय सहयोगियों में सम्मिलित हो गए और जीवन के अंतिम समय तक खालसा पंथ के आदर्शों के प्रति समर्पित रहे।

भाई जीवन सिंह का सैन्य योगदान

सन् 1699 ई. की बैसाखी पर गुरु गोबिन्द सिंह द्वारा खालसा पंथ की स्थापना के समय भाई जैता ने अमृत ग्रहण किया और उनका नया नाम भाई जीवन सिंह रखा गया। यह केवल नाम परिवर्तन नहीं था, बल्कि उनके जीवन में एक नए अध्याय का प्रारम्भ था। अब वे केवल गुरु के सेवक नहीं रहे, बल्कि खालसा सेना के एक समर्पित सैनिक, संगठक और योद्धा के रूप में उभरे।[29] खालसा पंथ की स्थापना के बाद मुगल साम्राज्य तथा शिवालिक क्षेत्र के अनेक पहाड़ी राजा गुरु गोबिन्द सिंह की बढ़ती शक्ति से चिंतित हो गए। परिणामस्वरूप आनंदपुर साहिब पर कई बार आक्रमण हुए। इन संघर्षों में भाई जीवन सिंह ने अग्रिम पंक्ति में रहकर युद्ध किया। वे गुरु गोबिन्द सिंह के विश्वसनीय योद्धाओं में गिने जाते थे और उन्हें महत्त्वपूर्ण सैन्य दायित्व सौंपे जाते थे।[30] भाई जीवन सिंह का सबसे बड़ा गुण उनका अनुशासन और गुरु के प्रति अटूट समर्पण था। सिख सेना में वे सैनिकों को साहस, धैर्य और आत्मबल का संदेश देते थे। खालसा की सैन्य परंपरा केवल युद्ध-कौशल तक सीमित नहीं थी; उसमें धार्मिक आस्था, नैतिकता और सेवा-भाव भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण थे। भाई जीवन सिंह ने इन आदर्शों को अपने जीवन में पूरी निष्ठा से अपनाया।[31] आनंदपुर साहिब की घेराबंदी (1704 ई.) के दौरान सिखों को भोजन, जल और अन्य आवश्यक वस्तुओं के गंभीर संकट का सामना करना पड़ा। कठिन परिस्थितियों के बावजूद भाई जीवन सिंह ने अपने साथियों का मनोबल बनाए रखा। वे गुरु के आदेशों का पालन करते हुए रक्षा व्यवस्था में निरंतर सक्रिय रहे और संकट की घड़ी में भी खालसा के आदर्शों से विचलित नहीं हुए।[32] आनंदपुर छोड़ने के बाद जब सिख दल विभिन्न दिशाओं में बिखर गया, तब भी भाई जीवन सिंह गुरु गोबिन्द सिंह के साथ रहे। उन्होंने सरसा नदी पार करने

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

तथा उसके बाद की कठिन परिस्थितियों में गुरु और संगत की सहायता की। इन घटनाओं ने उनकी निष्ठा, धैर्य और सैन्य नेतृत्व क्षमता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया।[33]

चमकौर के युद्ध में भाई जीवन सिंह ने असाधारण वीरता का परिचय दिया। सीमित संख्या में सिख सैनिकों ने विशाल मुगल सेना का सामना किया। भाई जीवन सिंह ने अंतिम क्षण तक युद्ध करते हुए खालसा की मर्यादा और गुरु के सम्मान की रक्षा की। परंपरागत सिख स्रोतों के अनुसार वे युद्धभूमि में वीरगति को प्राप्त हुए और इस प्रकार सिख इतिहास के अमर शहीदों में सम्मिलित हो गए।[34] भाई जीवन सिंह का सैन्य योगदान केवल युद्ध लड़ने तक सीमित नहीं था। उन्होंने खालसा सेना में समानता, अनुशासन, त्याग और सामूहिक नेतृत्व की भावना को सुदृढ़ किया। वे इस सिद्धांत के जीवंत उदाहरण थे कि खालसा पंथ में किसी व्यक्ति का सम्मान उसकी जाति या सामाजिक स्थिति से नहीं, बल्कि उसके साहस, सेवा और समर्पण से निर्धारित होता है। गुरु गोबिन्द सिंह द्वारा दिया गया सम्मान "रंगरेटा गुरु का बेटा" इसी आदर्श का सर्वोच्च प्रतीक है।[35] इस प्रकार भाई जीवन सिंह का सैन्य योगदान सिख इतिहास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। वे एक ऐसे योद्धा थे जिन्होंने धर्म, न्याय, मानवाधिकार और धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उनका व्यक्तित्व खालसा की उस सैन्य परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें आध्यात्मिकता और शौर्य का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।[36]

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य सिख इतिहास के महान योद्धा एवं समर्पित सेवक भाई जैता (भाई जीवन सिंह) के ऐतिहासिक योगदान का पुनर्मूल्यांकन करना है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भाई जैता केवल गुरु तेग बहादुर जी के विश्वसनीय सिख ही नहीं थे, बल्कि वे साहस, निष्ठा, सेवा और बलिदान के अद्वितीय प्रतीक थे। इतिहास में उनका योगदान केवल गुरु तेग बहादुर जी के पावन शीश को दिल्ली से आनंदपुर साहिब तक सुरक्षित पहुँचाने तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्होंने सिख पंथ की मर्यादा, धार्मिक स्वतंत्रता और मानवीय मूल्यों की रक्षा में भी अमूल्य भूमिका निभाई। शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि गुरु तेग बहादुर जी का बलिदान केवल हिन्दू धर्म या कश्मीरी ब्राह्मणों की रक्षा के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के धार्मिक अधिकारों और आस्था की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए था। इस महान उद्देश्य की पूर्ति में भाई जैता का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने अपने प्राणों की परवाह किए बिना मुगल सत्ता की कड़ी निगरानी के बीच गुरु जी के पावन शीश को सुरक्षित आनंदपुर पहुँचाकर अद्वितीय साहस और अटूट श्रद्धा का परिचय दिया। गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा भाई जैता को "रंगरेट्टे गुरु के बेटे" की उपाधि प्रदान करना केवल व्यक्तिगत सम्मान नहीं था, बल्कि यह तत्कालीन समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव के विरुद्ध समानता, मानव गरिमा और सामाजिक न्याय का एक ऐतिहासिक संदेश था। इस घटना ने सिख पंथ की समतावादी विचारधारा को और अधिक सुदृढ़ किया तथा वंचित वर्गों को सम्मानजनक

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

स्थान प्रदान किया। शोध के दौरान उपलब्ध प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भाई जैता के योगदान का उल्लेख अधिकांश ऐतिहासिक ग्रंथों में सीमित रूप से मिलता है। उनके जीवन, सैन्य सेवाओं तथा सामाजिक योगदान पर अभी भी व्यापक और स्वतंत्र शोध की आवश्यकता है। इसलिए यह अध्ययन इस दिशा में एक सार्थक प्रयास है, जो भाई जैता के ऐतिहासिक व्यक्तित्व को पुनः स्थापित करने का कार्य करता है। अंततः यह कहा जा सकता है कि भाई जैता का जीवन साहस, निष्ठा, त्याग, सेवा और धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा का अनुपम उदाहरण है। उनका योगदान सिख इतिहास की अमूल्य धरोहर है तथा आज भी समाज को समानता, मानवता, कर्तव्यनिष्ठा और बलिदान की प्रेरणा प्रदान करता है। भविष्य में उनके जीवन और कार्यों पर और अधिक गहन अनुसंधान किया जाना चाहिए, ताकि भारतीय इतिहास में उनके वास्तविक योगदान को उचित स्थान मिल सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. ई. डी. मैकलैगन एवं एच. ए. रोज़, ए ग्लॉसरी ऑफ द ट्राइब्स एंड कास्ट्स, खंड-III, भाषा विभाग, पंजाब, 1989, पृ. 76।
2. भाई काहन सिंह नाभा, महान कोश, नेशनल बुक शॉप, दिल्ली, 1990, पृ. 791।
3. भाई रतन सिंह भंगू, पंथ प्रकाश, सिख हिस्ट्री रिसर्च बोर्ड, एस.जी.पी.सी., अमृतसर, 1984, पृ. 64।
4. पिआरा सिंह पदम, संक्षेप सिख इतिहास, सिंह ब्रदर्स, अमृतसर, 2000, पृ. 45।
5. तारण सिंह, गुरु तेग बहादुर, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1997, पृ. 43।
6. गुरु तेग बहादुर, सलोक, गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 1427।
7. सतबीर सिंह, साडा इतिहास, भाग-1, न्यू बुक कंपनी, जालंधर, 2004, पृ. 343।
8. गुलाम हुसैन ख़ाँ, सियार-उल-मुताख्खरीन (गुरु तेग बहादुर: फ़ारसी स्रोत), संपा. प्यारा सिंह, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, 1976, पृ. 68-69।
9. C. H. Payne, A Short History of the Sikhs, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, 1970, पृ. 21।
10. खुशवंत सिंह, Sikh History, नवयुग पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2003, पृ. 50।
11. जसबीर सिंह साबर, सिख धर्म अध्ययन, भाग-1, निदेशालय सिख अध्ययन, एस.जी.पी.सी., अमृतसर, 2008, पृ. 97।
12. सतबीर सिंह, साडा इतिहास, भाग-1, न्यू बुक कंपनी, जालंधर, 2004, पृ. 310।
13. सैयद मोहम्मद लतीफ़, History of the Punjab, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1989, पृ. 258।
14. प्यारा सिंह पद्म, संक्षेप सिख इतिहास, सिंह ब्रदर्स, अमृतसर, 2000, पृ. 43।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

15. सतबीर सिंह, साडा इतिहास, भाग-1, न्यू बुक कंपनी, जालंधर, 2004, पृ. 345।
16. तारन सिंह, गुरु तेग बहादुर: जीवन, संदेश ते शहादत, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1997, पृ. 41।
17. साहिब सिंह, गुर इतिहास, सिंह ब्रदर्स, अमृतसर, 2003, पृ. 310।
18. तारन सिंह, गुरु तेग बहादुर: जीवन, संदेश ते शहादत, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1997, पृ. 42।
19. सतबीर सिंह, साडा इतिहास, भाग-1, न्यू बुक कंपनी, जालंधर, 2004, पृ. 345।
20. पी. एल. राही, गुरु तेग बहादुर हिंद दी चादर, गुरु तेग बहादुर फाउंडेशन, नई दिल्ली, 2004, पृ. 60।
21. साक़ी मुस्तअद ख़ाँ, मआसिर-ए-आलमगीरी, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1977, पृ. 85।
22. तारण सिंह, गुरु तेग बहादुर: जीवन, संदेश ते शहादत, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1997, पृ. 42।
23. गुरबचन सिंह तालिब, Guru Tegh Bahadur: Background and the Supreme Sacrifice, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1976, पृ. 44।
24. भाई सरूप सिंह कौशिश, गुरु कीआ साखियाँ, संपा. पिआरा सिंह पदम, सिंह ब्रदर्स, अमृतसर, 2003, पृ. 78-79।
25. गुरदेव सिंह मान, तेग बहादुर बोलेया, लाहौर बुक शॉप, लुधियाना, 1975, पृ. 331।
26. रतन सिंह भंगू, पंथ प्रकाश, संपा. जीत सिंह सीतल, सिख हिस्ट्री रिसर्च बोर्ड, अमृतसर, 1984, पृ. 66।
27. ज्ञानी ज्ञान सिंह, तवारीख गुरु खालसा, भाग-1, भाषा विभाग, पटियाला, 2011, पृ. 723।
28. सिख इतिहास दीयाँ चोणवियाँ साखियाँ, भाग 1-6, सिख मिशनरी कॉलेज, लुधियाना, 2000, पृ. 65।
29. गंडा सिंह, गुरु गोबिन्द सिंह का जीवन (पटियाला: पंजाबी विश्वविद्यालय, 1998), पृ. 145-149।
30. खुशवंत सिंह, सिखों का इतिहास, भाग-1 (नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2017), पृ. 180-186।

31. जे. एस. ग्रेवाल, पंजाब के सिख (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2019), पृ. 72-78।
32. हरिराम गुप्ता, सिखों का इतिहास, भाग-1 (नई दिल्ली: मुंशीराम मनोहरलाल प्रकाशन, 2001), पृ. 258-265।
33. ज्ञानी ज्ञान सिंह, श्री गुरु पंथ प्रकाश (पटियाला: भाषा विभाग, पंजाब, पुनर्मुद्रित संस्करण), पृ. 412-418।
34. हरबंस सिंह (सम्पा.), सिख धर्म विश्वकोश, खण्ड-2 (पटियाला: पंजाबी विश्वविद्यालय, 2011), पृ. 235-237।
35. एच. एस. दिलगीर, द सिख रेफरेंस बुक (लुधियाना: सिख यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011), पृ. 168-171।
36. खुशवंत सिंह, सिखों का इतिहास, भाग-1, पृ. 190-195।